International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN -2250-253X, (Print), E-ISSN 2320-544X, Issued – 8, Vol- I, August, 2013

शोध पत्र- हिन्दी

उपन्यासकार जैनेन्द्र का नारी- विषयक दृष्टिकोण

* अनीता देवी

* सहाप्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय, जीन्द

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत रचनाकार अपने विचारों को गद्य व पद्य के माध्यम से प्रकट करता रहा है। जहाँ पद्य के अन्तर्गत रचनाकार अपने विचारों को संकुचित रूप से समेटता है, वहीं गद्य में अपने विचारों को उन्मुकतता के साथ प्रस्तुत करता है। कहा भी गया है 'गद्य कवीना निकशं वदन्ति अर्थात् गद्य कवियों की कसौटी होती है।

जहाँ तक किसी उपन्यासकार के विषयों को ध्यान में रखा जाए तो हम वहाँ दो प्रधान पक्ष पाते हैं। नारी तथा पुरूष। मानव–समाज रूपी रथ इन्हीं दो पहियों के बल पर शनै–शनैः अग्रसर होता है। हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है। पुरूष ने हमेशा अपना वर्चस्व कायम रखा है। किन्तु नारी की स्थिति में निरन्तर परिवर्तन होता आया है और हो रहा है। कभी वह पुरूष की प्ररेणादात्री बनी तो कभी वहा पुरूष की प्ररेणादात्री बनी तो कभी उसका मूल्य मनबहलाव के खिलौने से अधिक नही माना गया। नारी जीवन में होने वाले अद्वितीय परिवर्तन ने उपन्यासकारों को भी प्रभावित किया है। उपन्यासकारों को इसका चरित्रांकन करने में निरन्तर संघर्श करना पड़ा है।

प्रेमचन्द–युग में पहली बार मानवीय धरातल पर नारी–पात्रों की अवतारणा का प्रयास किया गया। प्रेमचन्द युग के नारी–पात्र नारी जीवनो चित सबलता एवं दुर्बलताओं से युक्त थे। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी के विविध उपन्यासकारों ने नारी के विविध रूपों की परिकल्पना की। समाज के स्थान पर व्यक्ति की प्रतिश्ठा का प्रश्न प्रेमचन्दोत्तर काल के उपन्यासों का मूलाधार बना पर साथ ही मन की गहनतम गुहाओं में प्रवेश करके चेतन अवचेतन के संघर्ष को भी प्रेमचन्दोत्तर काल के उपन्यासकारों ने प्रस्तुत किया। नैतिक मूल्य छिन्न–भिन्न होने लगे और हमारे पवित्र संबन्धों में दरारें पड़ने लगीं।

सन् 1936 ई0 में प्रेमचन्द–युग का अन्त हो गया। इस काल के बाद मनो विश्लेषणशास्त्र काफी प्रगति कर चुका था। मनोविश्लेषणशास्त्र के व्यापक प्रभाव ने हमारे हिन्दी–उपन्यासकारों का ध्यान भी आकृष्ट किया। मनोविज्ञान के प्रभाव ने नारी के मन का विश्लेषण उपन्यास कार अधिक गहराई से करने लगे। वास्तव में मनोविज्ञान की नवीनतम धारणाओं के अनुसार मानव ने सभ्यता और संस्कार के नीचे छिपी पशु–प्रवृत्तियों को बराबर दबाने का प्रयास किया है। प्रेमचन्द–युग में नैतिकता के मानदण्ड उच्च–भाव भूमि पर आधारित थे। उपन्यास साहित्य में विशेषतः नारी स्वरूप की दृष्टि से आविर्भाव क्रांतिकारी वायवीय कल्पना–जगत से यथार्थ की ठोस भूमि पर लेकर आए। प्रेमचन्द जी ने कहीं भी नैतिकता का उल्लंघन नहीं किया। उनके अधिकांष्ज्ञ समकालीन उपन्यासकार भी नैतिकता की सीमा में ही रहे, किन्तु फ्रायडी मनोविज्ञान ने इस नैतिकता के झीने आवरण को फाड़कर तार–तार कर डाला और आदर्श रूप नैतिकता के स्थान पर एक नई नैतिकता ने जन्म लिया। स्त्री–पुरूष के सारे पवित्र संबंध जीजा–साली, भाई–बहन, देवर–भाभी इस नैतिकता के कारण छिन्न–भिन्न हो गए।

फ्रायड के मनोविश्लेषण ने हमारे हिन्दी–उपन्यासकारों को विशिष्ट रूप से आकृष्ट किया। किन्तु इतना सत्य है कि मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों से हिन्दी–उपन्यास एक नए–मार्ग की ओर मुड़ता है। इस मार्ग में न तो मर्यादाओं का प्रश्न है और न ही आदर्शो की समस्या। स्त्री–पुरूष के संबधों का नए सिरे से अध्ययन हुआ और स्त्री के प्रति अपूर्व संवेदना प्रकट की गई। मनोविश्लेषण ने मुख्यतः स्त्री–पुरूष संबन्धी मूल्यों और समस्याओं को अपना धरातल बनाया है, क्योंकि प्रायड के समस्त मनोविश्लेषण सम्बन्धी सिद्धान्त स्त्री–पुरूष के यौन–संबधों पर ही आधारित हैं। इस प्रकार फ्रायड की विचारधारा ने कथा साहित्य को बहुत प्रभावित किया।

जहाँ तक हिन्दी में मनोविश्लषणात्मक उपन्यासकारों का प्रश्न इलाचन्द्र जोशी, धर्मवीर भारती, विष्णु प्रभाकर भगवती चरण वर्मा जैसे उपन्यासकारों को पाते है। इनमें भी जैनेन्द्र कुमार का नाम अग्रणीय है। प्रेमचन्दोत्तर काल में जैनेन्द्र जी के उपन्यासों में मनोविश्लेषण का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। हिन्दी जैनेन्द्र के 'परख' और 'सुनीता' उपन्यास से होता है। जैनेन्द्र ने सबसे पहले परम्परागत रूढ़िवादी श्रृंखलाओं और बंधी हुई परिपाटी से मुक्त होकर मन की। मन की रहयात्मक गुहाओं में बैठने की जैनेन्द्र की अंन्तदृश्टि असाधारण है।

जैनेन्द्र जी ने सूक्ष्म को स्थान में प्रकट करने के लिए दो उपकरणों का सहारा लिया–मनोविज्ञान और दर्शन। जैनेन्द्र जी ने एक और गांधीवादी आदर्श के द्वारा चरित्र के निर्माण और विकास में जीवन की नैतिकता दी। जैनेन्द्र के प्रमुख उपन्यास है 'परख' 'सुनीता' 'त्यागपत्र' 'कल्याणी' सुखदा। जिनमें अनेक नारी–चरित्र हमारे सामने प्रस्तुत होता है जो

जैनेन्द्र के मनोविश्लेषणात्मक विचारों को प्रस्तुत करते है। कुछ नारी चरित्रों का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत है।:–

'परख' जैनेन्द्र जी की प्रथम कृति है जिसकी प्रमुख नारी–पात्र है कट्टो। वह एक विद्यवा प्रमुख नारी–पात्र हैं कट्टो। वह एक विद्यवा सीधी–साधी स्त्री है जिसको यह भी मालूम की वह कब उसका विवाह हुआ और कब वह विद्यवा हो गई। कट्टों एक आदर्श नारी है। वह प्रेम केवल देना जानती है पर बदले में कुछ पाने की इच्छा नही रखती। वह प्रेम की वेदी पर अपने स्व की बलि चढ़ाकर सेवाधर्म के मार्ग की और उन्मुख होती है।

'सुनीता'–सुनीता' जैनेन्द्र जी की दुसरी कृति है जो परख से थोड़ी भिन्न प्रतीत होती है। यहाँ उपन्यासकार ने अपना दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। श्रीकात्त, सुनीता और हरिप्रसन्न के चरित्रों के माध्यम् से अपने दार्शनिक विवेचन के साथ आगे बढ़ता है। कहानी का हरिप्रसन्न एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता है। वह अपने मित्र श्रीकान्त के घर जाता हैं, श्रीकान्त की पत्नी सुनीता हरिप्रसन्न के सम्पर्क में आती है। हरि सुनीता की और आकर्षित होता है। और यही आकर्षण आसक्ति में बदल जाता है। श्रीकान्त हरि और सुनीता को अकेल छोड़कर बाहर चला जाता है। उसकी अनुपस्थिति में उन दोनों की आसक्ति बढ़ जाती है और सुनीता नग्न होकर हरि की वासना शान्त करने को तैयार हो जाती है। हरि की मोह–निद्रा टूट जाती है। हरि सुनीता को घर छोड़कर हमेशा के लिए चला जाता है।

dY;k.kh&

कल्याणी एक ऐसी स्त्री है जो विदेश से लौटकर आई है। कल्याणी सदा पश्चाताप की अग्नि में जलती रहती है, पर किस बात का पश्चाताप हैं, यह अन्त तक स्पष्ट नहीं होता।

कल्याणी के भूतपूर्व संबन्धों की बातें धीर–धीरे खुलती है। अन्त में पता चलता है कि विदेश में बैरिस्टर–प्रीमियर मित्र को निराश करने के कारण ही उसे अवसाद और अतृप्ति है। जीवन के अन्त तक वह अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को पति की इच्छा पर न्यौछावर करती रही। इस प्रयत्न में वह स्वय शून्य होती गई और एक दिन अकस्मात् ही शान्त हो गई।

e.kky&

'मृणाल' जो व्यागपत्र उपन्यास की प्रमुख नारी–पात्र हैं, वह मात् पितृ विहीन बालिका है जिसका पालन–पोषण उसके भाई–भाभी द्वारा होता है। मृणाल की यातनाओं का कारण हैं विवाह पूर्व प्रेम और इसी के कारण मृणाल की मृत्यु बड़ी नारकीय यातनाओं की बीच होती हैं। यहाँ जैनेन्द्र की कला यथार्थ का आकुल आलिगेन करती है। इस प्रकार जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी पात्रो में जो समानता देखेते हैं वह है उनका मनौवैज्ञानिक विश्लेषण। कट्टों, कल्याणी, सुनीता, सुखदा आदि सती स्त्री–पुरूषो का मूल तत्व उनके हदय की करूणा है। जैनेन्द्र के दास है। उनकी सभी नायिकाएँ अपनी समस्या के सागर में स्वयं लीन हो जाती हैं, किन्तु उनका यह बलिदान अर्थहीन नही होता।

उनके समस्त नारी–पात्र मानसिक घात–प्रतिघात से परिचालित होते से दिखते है। किसी भी नारी–पात्र को लें तो उसका मनः चेतन और अवचेतन से प्रभावित हो जाता है।

यौन–भावना मनोविश्लेषण शास्त्र की मूल तथा मौलिक समस्या है। अतः जैनेन्द्र के नारी–पात्रों में यौन आकर्शण का प्राबल्य होना आश्चर्य की बात नहीं। जैनेन्द्र ने सामाजिक दृष्टि से क्षीणता के कारण सामाजिक विवशताओं और नैतिक वर्जनाओं की और उतना ध्यान नहीं दिया, जितना नारी और पुरूष की अतृप्त वासनाजनित कुंणओं और मानसिक ग्रंथियों की और। जैनेन्द्र की दृष्टि से नर–नारी की समस्या का समाधान आत्मलय ही है।